लोक नायक जय प्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रान्ति के राजनीतिक विचार का अध्ययन

SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE AWARD OF A DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN SOCIAL SCIENCE

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

SUBMITTED TO

सुपरवाइज़र
प्रोफेसर रामजी सिंह
वाईबीएन विश्वविद्यालय
राजनीति विज्ञान विभाग

Research Scholar
सुशांत राज
राजनीति विज्ञान
YBNU2003649
2020-23
वाईबीएन विश्वविद्यालय

परिचय

जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार के सारण ज़िले के सिताबदियारा गाँव में 11 अक्टूबर 1902 को हुआ।उन्होंने पटना कॉलेज में अध्ययन किया। आगे चलकर स्वतंत्रता के लिए उन्होंने 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' की स्थापना की।विदेश प्रवास के दौरान उन्होंने समाजवादी सिद्धान्तों से गहरा प्रभाव प्राप्त किया।

अध्ययनार्थ विषय

- जे० पी० के जीवन व सम्पूर्ण क्रांति में रुचि।
- छद्म लोकतंत्र व भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष।
- गैर-दलीय लोकशक्ति की अवधारणा कमजोर पड़ी।
- मार्क्सवाद से गांधीवाद तक वैचारिक यात्रा।
- प्रयोगधर्मी, प्रेरक और लोकनायक व्यक्तित्व।
- लोकशक्ति, पंचायती राज व सहभागी लोकतंत्र पर अध्ययन।

अध्ययन का औचित्य:

इस शोध प्रबंध के माध्यम से जे० पीठ के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को और अधिक उजतार करने का प्रयास किया गया है जिससे आज आज के युवा पीढ़ी एवं समाज के जागरूक पीढ़ी इनके विचारों से अधिक से अधिक आत्मसात कर एक विकसित भारत के निर्माण में एवं विकसित सामाजिक व्यवस्था के मिमीण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

परिकल्पना / उप परिकल्पना

शोध में परिकल्पना की अभिवार्यता को स्वीकार किया. जाता है, जिसके आधार पर अन्वेषक शोध के स्वरूप, पद्धति, विषय-वस्तु एवं निष्कर्ष का पूर्व अनुमान लगता है अथवा शोध की सम्भावना को भी अभिव्यक्त करता है। मैने भी अपने प्रस्तुत शोध कार्य में लोक नायक जय प्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति के राजनीतिक विचार का अध्ययन में निम्नलिखित परिभव्यत किया है:

परिकल्पना / उप परिकल्पना

- आधुनिक भारतीय समाज में जे० पीठ के विचारों की वास्तविक रिम्यति का अवलोकन करना ।
- आधुनिक भारत में राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में किये गए प्रयास और स्थिति का वारत्तविक अवलोकन करना ।
- राजनीतिक सशक्तिकरण में जेठ पीठ की कार्य एवं भूमिका का अवलोकन करना ।
- संतुषित समाज के स्थापना में थे० पीठ के राष्ट्र-निर्माण एवं समाज निर्माण के संदर्भ में निष्कर्ष को प्राप्त करना।

परिकल्पना / उप परिकल्पना

- आधुनिक भारतीय समाज में जे० पीठ के विचारों की वास्तविक रिम्यति का अवलोकन करना ।
- आधुनिक भारत में राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में किये गए प्रयास और स्थिति का वारत्तविक अवलोकन करना ।
- राजनीतिक सशक्तिकरण में जेठ पीठ की कार्य एवं भूमिका का अवलोकन करना ।
- संतुषित समाज के स्थापना में थे० पीठ के राष्ट्र-निर्माण एवं समाज निर्माण के संदर्भ में निष्कर्ष को प्राप्त करना।

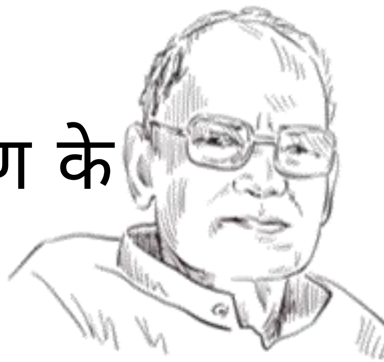

अध्ययन पद्धति

इस प्रस्तावित शोध प्रबंध की अध्ययन पद्धति ऐतिहासिक एवं वस्तु विश्लेषणात्मक होगी। इस शोध कार्य में प्राथमिक एवं सहायक दोनों स्रोतों की मदद ली जाएगी।

निष्कर्ष

- जेपी का जीवन एक निरंतर संघर्ष की गाथा है, जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और शोषण-मुक्त समाज के लिए अपना सर्वस्व अर्पित किया।
- वे क्रांतिनिष्ठा और लोकनिष्ठा के प्रतीक थे — जिन्होंने अपने निजी हितों को राष्ट्र और समाज के कल्याण में समाहित कर दिया।
- प्रयोगधर्मिता उनके व्यक्तित्व की विशेषता रही; उन्होंने परिस्थितियों के अनुसार विचारों में परिवर्तन तो किए, पर मूल मूल्यों से कभी समझौता नहीं किया।

निष्कर्ष

- जेपी का संघर्ष केवल अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध नहीं था, बल्कि आर्थिक और सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध भी था — चाहे वह जातिगत, वर्गगत या श्रम-पूँजी का शोषण हो।
- उनकी वैचारिक यात्रा गांधीवाद से मार्क्सवाद और पुनः लोकनायकवाद तक रही, जिसमें उनका उद्देश्य हमेशा एक रहा — जनता की शक्ति से न्यायपूर्ण और नैतिक समाज की स्थापना।

अध्यायीकरण

- अध्याय-1: पृष्टभूमि

  जे०पी० का व्यक्तित्व एवं कर्तृष्व

  (क) मार्क्सवादी जयप्रकाश

  (ख)प्रजातांत्रिक समाजवादी जयप्रकाश

  (ग) सर्वोदयी जयप्रभाश

  (घ) सम्पूर्ण क्रान्ति का द्रष्टा एवं नायक

अध्यायीकरण

- अध्याय-2: लोकशक्ति की गाँधीवादी अवधारणा :
  जयप्रकाश की व्योकशक्ति के विशेष संदर्भ में
- अध्याय-3: पंचायती राज्य एवं सहभागी लोकतंत्र : भारत के परिप्रेक्ष्य में
- अध्याय 4: भ्रष्राचार एवं लोकशक्ति
- अध्याय-5: लोकशक्ति आधृत सम्पूर्ण क्रांति
- अध्याय-6: उपसंहार
- परिशिष्ट : युवाशक्ति को आहवान

संदर्भ-सूची

1.- A Picture of Sarvodaya social orderi Tanjor: Sarvodaya publication's 1961

2.- A plea for the Reconstruction of Indian Polity! Varanasi: Akhil Bharat sarva-seva-Sangh, 1959

3.- Appeal to all, Patna: Bihar Relief committee, 1967

4.- A time to speak: Bihar Relif committee, 1967

5.- Bhartiya Rajya vyavastha ki funerrachona! EK sujhav, Varansi sarva-Sera-Sangh Prakashan, 1959

B. Compilations of J.P., S Writings

6.- Bhargava, G.S and Phadnis, UN- (ed.) Towards-Revolution, New Delhi, 1975

7.- Bhargava, G.S. (ed). JP's Jail Life: A Collection of Personal letters, New Delhi, 1977

8.-Agrawal, S. N. - Grandhion constitution for free India, Kitabistan, P. 46-47

9.- Arvind - Foundation of our Indian Calture, Sri Arvind Ashram, Bhartiya sanskeran, 1959.

10. Bang, Thakur Dash - Satyagrah kya, kyo Aus kaise 2 Varonsi: Sarva-sera-Sangh

11.- Benipuri, Rambriksha. - Jayaprakash (Hindi) Muzaffarpur, 1967

12.- Bhattacharjea, Asit - Jayaprakash Narayan! A Political Biography, New Delhi: Vikash Publishing House, 1975.
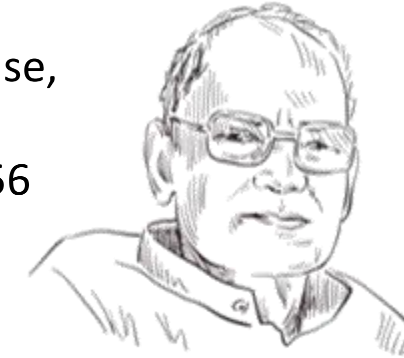
13. Bhare, Vinoba - Sarvodaya Vichar aur Swaraja shastra, Varansi : Sano. Seva-Sangh Prakashon, 1956